

## नकली फगिर प्रटि की समस्या का समाधान

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में आईआईटी इंदौर और इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईईटी) डीएवीवी के वैज्ञानिकों ने मलिकर ऐसा फगिर प्रटि बायोमीट्रिक सिस्टम तैयार किया है, जिससे नकली फगिर प्रटि का उपयोग कर होने वाले अपराधों की रोकथाम की जा सकेगी। इस महत्वपूर्ण शोध का पेटेंट कराया गया है।

### प्रमुख बंदि

- इस तकनीक की सहायता से बायोमीट्रिक मशीनों में ऐसा सेंसर लगाया जा सकेगा, जो असली और नकली फगिर प्रटि की पहचान कर लेगा। व्यक्ति जैसे ही अपनी अंगुली स्कैनर पर रखेगा, सेंसर उसकी पल्स (नाड़ी) भी पढ़ लेगा। इससे किसी मृत व्यक्ति के फगिर प्रटि के इस्तेमाल की आशंका भी समाप्त हो जाएगी।
- नकली और असली फगिर प्रटि की पहचान करने में सफलता मिलने से आधार और बायोमीट्रिक से जुड़े सभी तरह के उपकरणों की सुरक्षा बेहतर हो सकेगी।
- उल्लेखनीय है कि बैंकिंग क्षेत्र के साथ ही चोरी रोकने के लिये कई दफ्तरों और घरों में बायोमीट्रिक मशीनों का उपयोग किया जाता है। कई प्रतियोगी और भर्ती परीक्षाओं में भी बायोमीट्रिक मशीनों का उपयोग किया जाता है। शोध के आधार पर नई बायोमीट्रिक मशीनों का उत्पादन होने के बाद, नकली या मृत व्यक्ति के फगिर प्रटि का उपयोग नहीं हो सकेगा।
- कई बार हैकर्स फगिर प्रटि की छवि चुराकर उसका उपयोग आधार, समि और बैंकिंग क्षेत्रों में करने की कोशिश करते हैं। अभी बायोमीट्रिक मशीनें अंगुली की लकीरों को पढ़ती हैं और आगे की प्रक्रिया के लिये अनुमति दे देती हैं। नई तरह की मशीनों पर अंगुली लगाने के बाद सेंसर ब्लड की सेल्स और पल्स भी पता करेगा।
- शोध पर काम करने वाले देवी अहलिया विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईईटी) के प्रो. शशिप्रकाश एवं आईआईटी इंदौर के प्रो. वमिल भाटिया हैं।